



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
<https://egangotri.wordpress.com/>

द्वारकल अंक

M-2568

शिर्षक	ग्रंथकार	विषय	विस्तार (पूर्ण/ अपूर्ण)	टिकाकार	आकार	पृष्ठे	लिपी	सामग्री	Lines per page	Letters per line	Condition & age (शके/विक्रम संवत्)	Additional Particulars / Remark
महाभारत श्लोक		श्लोक	पूर्ण	-	3/5	3	संस्कृत	कागद	05	19		

श्रीगणेशाय नमः॥ अस्य श्री सरस्वती स्तोत्र
मंत्रस्य मा कर्तयेत्तन्मन्त्रं नमः॥ स्त
व्यं ननु वक्ष्ये॥ श्री सरस्वती देवता
या क सिध्यर्थं न वे विनियोगः॥ अथ ध्या
नं॥ शुक्ला ब्रह्म विचार सार वरमाप्तायां

अगच्छ्यापिनिविणा पुस्तकधारिनिमये
यदां ज्याडां धकारापहं हस्तेस्फाटिकभाकि
कां विदधंती पद्मसनेसरिस्त्रतां वंदेतां पर
मेश्वरी भगवती बुद्धिप्रदां हारदा ॥१॥ ॐ
हीं हीं हीं द्रुधं वीं ज्ञे हाहरी रुचिक्रमलाक

३

ज्ञानं भवत्यपराक्रमः ॥ कविवंशम
सादेन प्राप्नुवन्ति मनोगतः ॥ १२ ॥ मिश्रं
ध्वं प्रयतो भूत्वा यस्मिन् पठते नरः ॥ त
स्य कंठं सदा वा संकुरिष्यामि न संशयः
॥ १३ ॥ ऐं ह्रीं वरुणं वरुणादिभिर्भक्तितो
ये सरस्वति स्वाहा ॥ इति श्रीरुद्रयाम

ॐ बृहस्पति षोऽक्षं स रस्य विस्त वरुजं
३॥ संपुनभस्तु॥ सुभंभवस्तु॥ ५॥ ५॥ ५॥

[OrderDescription]
,CREATED=08.01.20 11:32
,TRANSFERRED=2020/01/08 at 11:34:19
,PAGES=5
,TYPE=STD
,NAME=S0002479
,Book Name=M-2568-SARSVATI STROT
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,